F-5

D.El.Ed-1st year

इकाई-III

Date:- 12.05.2020

Topic:- भाषा सीखना : नोम चोमस्की

भाषा के संदर्भ में चोमस्की की सबसे बुनियादी मान्यता यह है कि भाषा का विकास अनुभवों का परिणाम नहीं है। उनके अनुसार भाषा के विकास के लिए वातावरण उद्दीपन का काम करता है लेकिन इसका विकास वातावरण के कारण नहीं होते। वे भाषा को आँख, कान, नाक आदि की तरह ही शरीर का अंग मानते हैं जो मानव जाति की विशेषता है। मस्तिष्क का एक भाग भाषा के विकास के लिए जिम्मेदार होता है। जैसे शरीर का एक भाग, आँख, देखने के काम हेतु समर्पित है। जिस प्रकार वस्तुओं या घटनाओं के होने मात्र से आँख विकसित नहीं हो जाती उसी प्रकार वस्तुओं आदि के होने से भाषा का विकास नहीं हो जाता। अनुभव भाषा के विकास में वही काम करते हैं जो भोजन देखने की क्षमता के विकास में करता है। जैसे आँख जन्मजात है, वैसे ही भाषा भी जन्मजात होती है। इस बात को समझाने के लिए वे उदाहरण देते हैं कि- "यदि भाषा जन्मजात नहीं है, तो इसका मतलब यह है कि मेरी पोती, पत्थर और खरगोश में कोई अन्तर नहीं है। दूसरे शब्दों में आप पत्थर, खरगोश तथा मेरी पोती को अंग्रेजी बोलने वाले लोगों के बीच छोड़ दें तो वे सभी अंग्रेजी सीख जायेंगे।" अगर भाषा वातावरण के कारण संभव होती है तो पत्थर और खरगोश भी भाषा सीख जायेंगे। चोमस्की का मानना है कि भाषा को यांत्रिक तरीके से नहीं समझा जा सकता। व्यवहारवादियों ने भाषा की यांत्रिक व्याख्या की। उन्होंने भाषा को उद्दीपन-प्रतिक्रिया के रूप में समझा। यानि एक वस्तु या घटना के लिए विशेष प्रतिक्रिया। चोमस्की का कहना है कि वे एक वस्तु या घटना के लिए अनेक वाक्यों की रचना कर सकते हैं। इसलिए भाषा को उद्दीपन अनुक्रिया के रूप में समझना गलत है। वे मानते हैं कोई भी व्यक्ति, आनुवांशिक तौर पर किसी विशेष भाषा को सीखने के लिए नहीं बना है। जिस व्यक्ति को जो समुदाय मिलता है वह उसकी भाषा सीख जाता है। यदि किसी अंग्रेजी भाषा का जन्म जापानी बोलने वालों के बीच होता तो वह जापानी भाषी होता।

END